Rs. 5/-

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

nbt.india
एकः सूते सकलम्
Vol. 19, No. 2, February 2014

Readers' Club Bulletin
पाठक मंच बुलेटिन

Vol. 19, No. 2, February 2014 **वर्ष 19, अंक 2, फरवरी 2014**

Editor / संपादक
Manas Ranjan Mahapatra
मानस रंजन महापात्र
Assistant Editors / सहायक संपादकगण
Deepak Kumar Gupta
दीपक कुमार गुप्ता
Surekha Sachdeva
सुरेखा सचदेव
Production Officer / उत्पादन अधिकारी
Narender Kumar
नरेन्द्र कुमार
Illustrator / चित्रकार
Suresh Lal
सुरेश लाल

Printed and published by Mr. Satish Kumar, Joint Director (Production), National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase-II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

Printed at Pushpak Press Pvt, Ltd. 203-204, DSIDC Shed, Ph-I Okhla Ind. Area, New Delhi.

Typeset at Nath Graphics, 1/21, Sarvapriya Vihar, New Delhi-110016

Contents/सूची

चिट्ठी आई है		1
सात समुंदर	डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी	2
Gold or Grain	Tertia Sandhu	4
चिड़िया उड़ गई	सुरेश 'आनंद'	8
The Tiger Myth	Indira Bagchi	10
आधुनिक श्रवण कुमार	संजीव जायसवाल 'संजय'	13
हरियाली का पलना	कमलसिंह चौहान	15
Valiant Daughter of India	Roop N. Kabra	16
The Mystry of.....	Ankit Meena	17
शेरनी का बच्चा	एलिजाबेथ टुट्टी	21
यूकेलिप्टस हटाओ	माधुरी टिल्लू	22
दो कविताएँ	प्रयाग शुक्ल	25
पहेलियाँ	उदय ठाकुर	26
गणित में दिलचस्पी जगाने...	सौजन्य: *दैनिक भास्कर*	27
हाथी काका	डॉ. अनिल सवेरा	29
Unto Reality	Cadet Suraj Kumar Verma	30
The Selfish Squirrel	Ramesh Chandra Dash	31
फोन नंबर पूछो.....	आइवर यूशिएल	32

Editorial Address/ **संपादकीय पता**
National Centre for Children's Literature, National Book Trust, India, Nehru Bhawan 5, Institutional Area, Phase - II, Vasant Kunj, New Delhi-110070

राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया, नेहरू भवन, 5 इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेस-II, वसंत कुंज, नई दिल्ली-110070

E-Mail (ई-मेल) : office.nbt@nic.in

Per Copy/ एक प्रति Rs. 5.00 Annual subscription/वार्षिक ग्राहकी : **Rs. 50.00**

Please send your subscription in favour of **National Book Trust, India.**

कृपया भुगतान **नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया के** नाम भेजें।

This Bulletin is meant for free distribution to Readers' Clubs associated with National Centre for Children's Literature.

यह बुलेटिन राष्ट्रीय बाल साहित्य केंद्र से जुड़े पाठक मंचों को निशुल्क वितरित किया जाता है।

चिट्ठी आई है...

संयोग ही था कि 'पाठक मंच बुलेटिन' का अंक देखने का अवसर मिला। प्रथमदृष्टया मन को भा गया। सुंदर कलेवर, साफ-सुथरी छपाई, बढ़िया सामग्री, वह भी दो भाषाओं- हिंदी व अँग्रेजी में। रचनाएँ ऐसी कि बच्चे और बड़े सभी उनका भरपूर आनंद ले सकें। पत्रिका घर में आते ही बच्चे और बड़े सबों में होड़ मच जाती है पहले पढ़ने के लिए। ऐसी अनोखी उपयोगी पत्रिका के प्रकाशन के लिए मेरा हार्दिक साधुवाद! 'बुलेटिन' और प्रगति करे, सफलता प्राप्त करे और लोकप्रियता की हर सीमा लाँघ जाए!

ओम प्रकाश बजाज, बी-2, गगन विहार, गुप्तेश्वर, जबलपुर-482001 (म.प्र.)

मैंने पहली बार 'पाठक मंच बुलेटिन' पत्रिका रेल में देखी। पत्रिका ने इतना मन मोहा कि कहाँ तक बखान करूँ! यह एक उत्कृष्ट मनमोहक बाल साहित्य की जानकारी देने वाली पत्रिका है।

मोहित कुमार पूनिया, लोहार की-345023
जैसलमेर (राजस्थान)

मैं पिछले कई वर्षों से 'बुलेटिन' का पाठक रहा हूँ। हाल के महीनों से 'बुलेटिन' में निखार आया है जो कि सराहनीय है।

राधाकांत भारती, 56, नागिन लेक, पीरागढ़ी नई दिल्ली-110087

NBT-Hyderabad Book Fair

National Centre for Children's Literature (NCCL) of NBT organised several book related programmes for children, young adults and makers of children's literature in recently concluded Hyderabad Book Fair held from 7 to 15 December 2013. The events included a *Storytelling Marathon*, a Workshop on *Creative Writing and Illustration*, a Panel Discussion on *Writings for the Children in Indian Languages: Problems and Possibilities* and a meeting of Telugu authors and illustrators for children.

Eminent illustrator Shri Kolloju and authors Shri C H Venkataramana, Shri D Venkataramana, Smt. Swati Sreepada, Shri Suddala Ashok Teja, Shri Jonnalagadda Rajagopal, Shri Machirajukameshwar, Shri P Suresh Kumar, Shri A Govinda Rajulu, Smt. D Sujata Devi among others participated in the programmes. The events were coordinated by Shri Manas Ranjan Mahapatra, Editor (NBT) and Shri P Mohan, Asstt. Editor (NBT).

धारावाहिक उपन्यास
भाग : 11

सात समुंदर

कुछ पाने के लिए अपने कद से ऊपर उठना होगा

डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधरी

गायत्री तैराकी की तैयारी के लिए रोज 'अलेप्पी' जाएगी और नारायणन उसे ट्रेनिंग देंगे। इस पर घर में बहस हो रही थी। इसके बाद गायत्री परिवार के साथ आतिशबाजी का नजारा देखती है। घर लौटकर बहस जारी रहती है। अप्पुपन की जिद है कि गायत्री तैराकी में आगे बढ़े। दद्दा अप्पुपन सोई गायत्री के सिर के पास पुरस्कार में मिले विंड चाइम को लटका देते हैं। इस भाग में कुछ और नई बातें...

सपना तो अब गायत्री भी देखने लगी थी। अच्छी तैराक बनने का सपना। कंपीटिशन में स्वर्ण पदक जीतने का सपना। यूँ ही खेल-खेल में नारायणन ने जिस बात की शुरुआत की थी, वही आज उसके दिलो-दिमाग के पोर-पोर में पुराने बरगद के पेड़ की जड़ की तरह घुस गई है। गायत्री तैराक बनना चाहती है।

परंतु इच्छा एवं सामर्थ्य में अंतर होता है, ख्वाब को हकीकत में बदलने के लिए एक-एक बूँद पसीने से ख्वाब के पौधे को सींचना पड़ता है।

प्रतिदिन घड़ी में अलार्म लगाकर नारायणन स्वयं चार बजे उठ जाते, फिर पोती को उठाते। मुँह-हाथ धोकर एक प्याली कॉफी पीकर वह तैयार हो जाती। चार पचास के फेरी लंच से दोनों अलेप्पी के लिए चल देते। घर से पंपा तक नारायणन पोती को साइकिल पर ले जाते। अलेप्पी पहुँचकर फेरीघाट से स्टेडियम तक नारायणन फिर उसे अपनी साइकिल पर ढोते।

उस दिन सुबह आँख खुलते ही गायत्री को कुछ अचरज हुआ। "अरे, यह आवाज कैसी है?"

रोज की तरह बाग से चिड़ियों की चहक टी-वी-टी-टुट् टुट् के बदले टुन-टुन की आवाज कैसी?

तभी दद्दा भी आ गए, "अरे, बुत बनकर बैठी क्या है? चल उठ! तेरी ट्रेनिंग की घंटी बज रही है। सुन-सुन! तूने तो कल खोलकर देखा भी नहीं, आखिर तुझे मिला क्या!"

इधर कुमारन की आँखों में भी एक ज्योति चमकने लगी है, "सर, आपने मुझे कच्चा लोहा लाकर दिया है। उसे फौलाद बनाना मेरा काम है। मैं वचन देता हूँ आपकी यह मेहनत व्यर्थ नहीं जाएगी।"

स्टेडियम में प्रायः एक से डेढ़ घंटे की ट्रेनिंग। सबसे पहले फ्री हैंड एक्सरसाइज, यानी स्किपिंग, रस्सी कूदना आदि। इससे शरीर की मांसपेशियाँ शिथिल एवं सजग हो जाती हैं। फिर तैरना। स्फूर्ति और दम बढ़ाने के लिए कभी-कभी दौड़ भी।

चार शब्दों में इस बारे में लिखना जितना आसान है, करना उतना नहीं। साढ़े सात बज जाते हैं यह सब करते-धरते।

एक दिन थककर गायत्री सुस्ता रही थी तो कुमारन ने बताया, ''मिल्खा सिंह का नाम सुना है? उन्होंने 1956 के मेलबोर्न ओलंपिक की दौड़ में चौथा स्थान प्राप्त किया था। ढाई साल तक रोज पाँच घंटे दौड़ते थे। कई बार तो मुँह से खून तक आ गया। उनके दोस्तों को उन्हें अस्पताल ले जाना पड़ा था।''

खेलकूद के बारे में इन सच्ची कथाओं को गायत्री ध्यान से सुनती। कुमारन ने ही बताया था कि चार सौ मीटर की दौड़ में दो सौ पचास मीटर तक सबसे आगे रहकर भी वे एक भी पदक न पा सके। उन्होंने सोचा, वे बहुत तेज दौड़ रहे थे। अतः उन्होंने पीछे मुड़कर देखा। बस, इतने में ओटिस डेविस (अमेरिका), कार्ल कौफमैन (जर्मनी) और मैलकन स्पेन्स (द. अफ्रीका) आगे बढ़ गए। वे सोना, चाँदी और कांस्य पदक ले गए। मिल्खा के हाथ कुछ भी नहीं आया। मिल्खा चौथे स्थान पर होकर रह गए और भारत को ओलंपिक एथलेटिक्स में आज तक कोई पदक नहीं मिला।

उन्हें तो 'उड़न सिख' कहा जाता था। उन्हें यह उपाधि देने वाले थे पाकिस्तान के राष्ट्रपति अयूब खाँ। जब उन्होंने पाकिस्तान के ही अब्दुल खालिक को दो सौ मी. की रेस में हराया था।

शुरू-शुरू में गायत्री जब स्टेडियम से निकलती थी तो किसी-किसी दिन अपने अप्पुपन की साइकिल के हैंडिल पर ही सिर टेककर सो

जाती। बेचारी क्या करती? सुबह उठना, फिर यह सब। घर पहुँचकर स्कूल भी तो जाना रहता है!

ऐसे ही एक दिन सोते-सोते अचानक साइकिल से लुढ़क गई।

''अरे गायत्री, क्या हो गया? नारायणन जल्दी से ब्रेक न लगाते तो दुर्घटना हो सकती थी, सो गई थी?''

घर में जब इस बात का पता चला तो सभी चिंतित हो उठे। मणिशंकरन भी अपने पिता से कहता, ''यह आप पर कौन-सा जुनून सवार हो गया है अप्पा? अरे, अपनी उम्र का तो ख्याल कीजिए!''

नारायणन हँस दिए, ''महाबली से इस पृथ्वी को पुनः पाने के लिए स्वयं भगवान पद्मनाभस्वामी को भी वामनावतार का रूप लेना पड़ा। हमें भी कुछ पाने के लिए अपने कद से ऊपर उठना होगा।''

सी-26/35-40 ए, राम कटोरा
वाराणसी-221001 (उ.प्र.)

From NBT's Treasure Trove

Gold or Grain

Tertia Sandhu

In a faraway village there lived two neighbours who constantly squabbled and competed with each other. One was a farmer and the other a businessman. Both men worked very hard and were successful in their chosen field. Their children were friends but like their fathers, they too played the game of one-upmanship.

"We have a sack full of gold and silver in our house while you poor people have none," the businessman's son scoffed at the farmer's son. The farmer's son ran home to his father in tears.

"Father, are we very poor? Khamhu says we are poor because we do not have any gold or silver like them?" The farmer was quick to take offence. "What does he know? Does his father know how much grain we have? If we were to compare our grain with their gold we would have a hundred times more than them." The little boy's eyes lit up and he ran to convey the message to his friend.

Khamhu took up the matter with his father as soon as the tired man got home for lunch. *How dare the farmer compare his measly grain with gold?* So annoyed was he that he immediately marched off to the farmer's house.

"I can buy off all your grain and still have more gold than you," he told the farmer who was having his dinner. The farmer took a moment to swallow his food before replying. "My grain is worth more than all your gold and silver."

"Ha! Ha! You are a strange fellow!" the businessman laughed. "Why don't we go to the king and let him settle this matter once and for all?"

"Alright!" the farmer agreed. "But his majesty will want some proof."

"That's easy," the businessman replied. "I'll take all my gold and silver and you take your grain." They decided to leave for the king's court the following day.

"How are you going to carry all the grain? We do not have enough sacks and neither do we have a cart," the farmer's wife fretted. Indeed, they had very little else besides their granary which was always full of grain. Perhaps it was not such a good idea to go to the king. The

more she thought about it the more she began to worry about how her husband was going to manage this seemingly impossible task.

"What are we going to do?" she asked. "Have you thought of a solution?"

"Make me a khowpuk hat and cloak," the farmer said. "Have it ready by night time."

The obedient wife set to work at once. She went to her friend and exchanged a basket of grain for some sesame. While waiting for the rice to cook, she roasted the sesame and pounded it to a fine powder. Then she emptied the cooked rice into a large tub and sprinked salt and sesame powder over it. Both husband and wife took turns with the pestle, pounding the rice into sticky dough. They patted the dough into the shape of a conical hat and a cloak. It was already dark by the time they finished and both were totally exhausted.

The businessman did not have any problem. He simply bought a new sack and filled it with his gold and silver. When he woke up the next day he wore his best clothes, loaded the sack onto a horse drawn cart and set off for the palace. He slowed down in front of his neighbour's gate and almost fell off the cart in surprise at what he saw. The farmer seemed to be wearing something stiff and bulky and had trouble moving about.

"Do you want a ride on my cart?" the businessman shouted out. The farmer was reluctant to accept a ride from his competitor but his wife whispered, "Go! You can hardly walk in what you're wearing and it's a long journey to the king's palace."

"It looks like you are carrying the entire contents of your granary on your body," the businessman smirked.

"Only a little bit of it my friend. A tiny grain, compared to what I have at home," the farmer answered good naturedly.

After a long and tiring journey they reached the gates of the imperial palace. The guards led them into the royal court. What a strange sight they made. A well dressed man bent double under the load of a heavy sack accompanied by an oddly

** Khowpuk: Sticky rice cake*

dressed man. The king's eyes almost popped out of his head when the two men were presented before him.

"What brings you here?" he asked.

The businessman spoke first. "Your majesty," he said. "We cannot decide which one of us is richer. I have this sack full of gold and silver while he only has a granary that's full of grain. We have come all the way to meet you so that you may judge which one of us is richer."

"Fools!" the king thundered. "Do you think I have nothing better to do than make silly judgements? I'll have you thrown in prison and you can stay there till you both decide between yourselves who is richer."

The two men were taken to prison and locked up, sack and all. They had never in their wildest dreams expected the king to react in this manner.

"It's so unjust of the king to lock us up like criminals. We haven't committed any crime," the farmer grumbled. "It's all your fault. You were the one to suggest this stupid idea of coming here."

"Perhaps if you had not worn that silly costume the king might have listened to us," the businessman replied. They argued on and on till it got dark and their throats went dry.

"I'm hungry," the businessman complained. He walked to the door and yelled out, "Guards! When are we getting food? We're hungry."

"We have not been told to give you food," the guard replied and walked off to another part of the building.

"Does the king want us to starve to death?" the businessman said. "Does he think we can survive on air?"

"Luckily I won't starve," the farmer said as he broke off a piece of his hat and ate it. "My wife is an excellent cook. The salt and sesame are in just the right proportion." The businessman looked longingly at the khowpuk. His stomach growled in protest.

"Let me have a little bit of your khowpuk," he said at last. "I'm really hungry."

"Food is scarce here," the farmer replied. "If I share it with you what will be left for me to eat?"

"No! No! I don't want it for free. I'll pay you for it," the businessman said, opening his sack and taking out a silver coin. The farmer took the coin and handed him a very tiny piece of khowpuk in return. The businessman was about to protest but he knew he could not afford to offend the farmer. Not when he depended on him for food.

"Isn't your khowpuk overpriced?" the businessman asked. "For that amount I could have bought a sack of grain."

"So why don't you do that?" the

farmer replied. “I’m not forcing you to buy from me.”

The businessman was hungry. The morsel of khowpuk he had eaten only served to whet his appetite. He took out a handful of coins and kept on buying pieces of khowpuk from the farmer until his stomach was full. The same thing was repeated the next day and the next until the khowpuk hat and cloak were over and there was not crumb left. The businessman dug into his sack each time he was hungry and the farmer handed him a tiny piece of khowpuk in exchange. The farmer was now the proud owner of the sack of gold and silver that had not so long ago belonged to the businessman.

“Now who do you think is richer?” asked the farmer with a satisfied look on his face.

“You have reduced me to the status of a pauper,” the businessman pointed out. “All my gold now belongs to you. If you are not rich, who is?”

The two men called the guards and said they had come to an agreement and no longer needed to be kept in jail. The king had released them and they went home, one richer and the other poorer but both undoubtedly wiser.

(From the NBT Publication *Lengdon’s Legacy*)

चिड़िया उड़ गई

सुरेश 'आनंद'

बच्चों ने देखा, एक चिड़िया कमरे के रोशनदान से आई और ट्यूबलाइट पर बैठ गई। फिर उड़कर चली गई।

दोपहर तक चार चिड़ियाँ पुनः आईं। आकर ट्यूबलाइट पर बैठ गईं। फिर चारों बाहर से तिनका चोंच में रखकर आती-जाती रहीं।

दो-तीन दिनों तक चिड़ियाँ अपना घोंसला बनाती रहीं। बच्चे उनको तोड़ते रहे। चिड़ियाँ के लाए तिनके, घासफूस निकाल-निकालकर सड़क पर फेंकते रहे।

कितने ही दिनों तक बच्चों व चिड़ियों की यूँ ही आँखमिचौली होती रही। चिड़ियाँ घासफूस-तिनके-डोरा-रूई जो भी मिला ला-लाकर अपना घोंसला बनाती रही। बच्चे सुबह उसका निरीक्षण करते और फिर तोड़ देते।

एक दिन बच्चों ने देखा, चिड़ियों के दो

जोड़े चीं... चीं... कर उड़ती-उड़ती कमरे में आ गए। चिड़ियाँ आकर ट्यूबलाइट पर बैठ गईं। उनके आते ही चिड़ियों के नन्हे-नन्हे बच्चे चोंच निकालने लगे। चिड़ियाँ उनकी चोंच में दाना चुगाने लगीं। पता नहीं क्यों बच्चे सहम-से गए।

दूसरे दिन बच्चों ने देखा, उनका नन्हा बच्चा ट्यूबलाइट के ऊपर बैठने की कोशिश करता रहा।

बच्चे सोचने लगे, हम लोग ट्यूबलाइट के ऊपर के इस घोंसले को अखबार में उठाकर क्यों न बाहर फेंक दें।

बच्चे सोच ही रहे थे तभी माँ आ गई। कहने लगी, ''बच्चो, क्या कर रहे हो?''

बच्चे बोले, ''माँ! माँ! देखो, चिड़ियाँ ने यहाँ पर घोंसला बना लिया है। एक बच्चा भी देखा है। हम इसको तोड़ने की सोच रहे हैं।''

माँ बोली, ''नहीं बच्चो! घोंसला मत तोड़ना। अगर चिड़ियाँ तुम्हारा घर तोड़ दे तो तुम्हें कैसा लगेगा?''

बच्चों ने एक-दूसरे की ओर देखा। फिर बोले, ''माँ! माँ! देखो, इन्होंने कितना गंदा भी तो कर दिया है। देखो, कितनी घास ले आई हैं?''

माँ ने स्नेह से बच्चों को देखा और प्यार से बोली, ''देखो बच्चो! जैसे मैं तुम्हारी माँ हूँ वैसे ही चिड़िया भी अपने बच्चों की माँ है। कोई तुम्हारी माँ को मारेगा तो क्या तुम्हें अच्छा लगेगा?''

बच्चे बोले, ''नहीं... नहीं... माँ! आपको कोई नहीं मार सकता। हम भी उसको मार डालेंगे!''

माँ बोली, ''बच्चो, इसी तरह तुम भी चिड़िया को मत मारो। उसका घोंसला मत तोड़ो। वह तो अपने बच्चे बड़े होने पर स्वतः ही कहीं ले जाएगी। फिर ये बच्चे आकाश में उड़ने लगेंगे। फिर तुम्हें आकाश में ये कितने सुंदर लगेंगे!''

बच्चे बोले, ''नहीं... नहीं... माँ! सचमुच में हम घोंसला कभी नहीं तोड़ेंगे।''

माँ बोली, मेरे अच्छे बच्चो! तुम कितने अच्छे हो! देखो-देखो, सचमुच में चिड़िया उड़ गई है। बच्चे भी जा रहे हैं। बच्चे चीं... चीं... करते कितने खुश हैं ना?''

आनंद परिधि, एल-62
पं. प्रेमनाथ डोगरा नगर, रतलाम-457001 (म.प्र.)

The Tiger Myth

Indira Bagchi

In India, animals are treated not only as animals, they are also considered divine and hold important place in our religion. Perhaps no other culture is as inherently associated with nature as Indian culture.

Most of the gods have animals as their vahanas (vehicles) and these animals are worshipped along with the deities who ride them. From the mighty elephant to the humble rat—all are revered in our mythology.

Goddess Durga rides a tiger; Lakshmi, the goddess of wealth—an owl; Saraswati, the goddess of learning, sits on a swan; Lord Ganesh on a rat and Kartikeya is seated on a peacock. Shiva's *vahana* is Nandi, the bull. A snake also remains coiled around Shiva's neck. Lord Vishnu is seated on Garuda (eagle). The bed on which Lord Vishnu reclines with His consort is made of Sheshnag (snake).

Out of these vahanas the most powerful is the lion or the tiger the vehicle of goddess Durga. Tiger has played a major role in Indian mythology. No creature dares match his supremacy. He is known as the King of the Jungle, its guardian and the supreme protector.

According to the wildlife expert, Valmik Thapar, "Tiger is the most powerful representation of nature that walked the earth. Nature is the giver of life and the tiger seemed to symbolize the force that could provide life, defeat evil and act as 'elder brother' to man, defending crops and driving out unhealthy spirits. It was the protector, the guardian, the intermediary between heaven and earth."

There are many stories connected with tiger or lion.

The *Narsimha Avatar* is the story of young Prahlad who was an ardent worshipper of Lord Vishnu. His father King Hiranyakashyap resented this as he considered himself to be the most powerful person on earth.

The king was given a boon by God that he could not be killed by a man or an animal, he could not be killed in the morning or at night neither could he be killed inside a house nor outside, no weapon could kill him, he could not be killed on the ground or in the sky. This boon made him a very powerful and proud person and he started torturing his subjects.

One day Hiranyakashyap challenged his son Prahlad to show him where his God was. Prahlad told his father that God was everywhere.

The king asked him if God was present in the nearby pillar. When Prahlad said that He was in the pillar, Hiranyakashyap hit the pillar with the mace and Lord Vishnu emerged from the pillar in the shape of half lion and half human, put the evil king across His knees and killed him with His nails under the threshold of the room at twilight when day and night met.

In some parts of India, especially Bengal, Durga Puja is celebrated with lot of enthusiasm. Vijayadashami represents the victory of goddess Durga, riding the tiger, over Mahisasura, the great buffalo headed demon.

According to a Puranic story, Mahishasura became so powerful that none of the devas (gods) could defeat him. Therefore the deities met, pooled together their weapons which is a symbol of pooling their power, resulting in a great explosion of light from which goddess Durga emerged with these weapons in her ten hands, riding a lion, and killed Mahishasura.

There is another legend connected with *Ayyappan* in Kerala, who is the third son of Lord Shiva and Parvati after Ganesh and Kartikeya. People in north India do not know much about him.

Ayyappan was 'born' to the king and queen who were childless. He was not really born. The king and queen found this beautiful child on the bank of a river and brought him up as their own child.

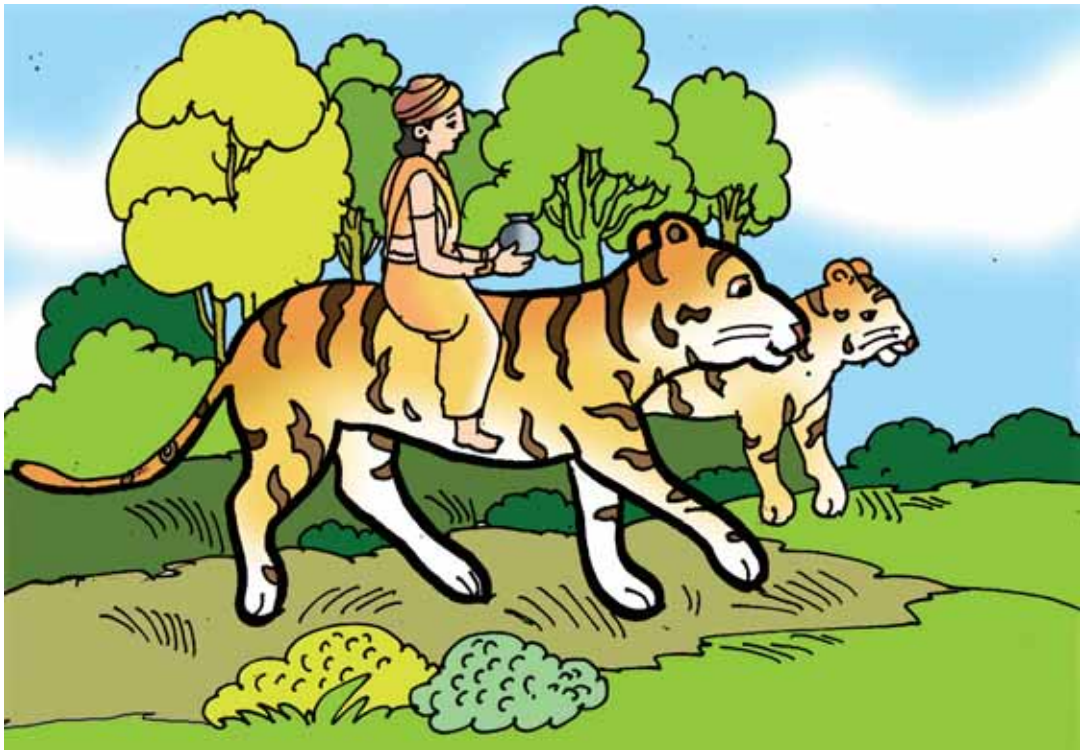

After that, the queen had a child of her own and was jealous at the thought that the adopted son, Ayyappan, would inherit the throne.

Ayyappan's foster mother pretended that she was terribly ill. The royal doctor advised her that she could be cured if somebody could bring milk of a tigress for her. Nobody was prepared to do that. Twelve year old Ayyappan volunteered to bring the milk for the queen.

Young Ayyappan went into the forest and returned riding a tiger and followed by many tigers of the forest. It is believed that all the devas assumed the form of tigers and followed Ayappan.

The king was terrified and begged the forgiveness of Lord Ayyappan. But Ayyappan did not stay any longer. He said, "I am 13 years old and I am going."

The king, realizing that he was not facing an ordinary human being, asked, "Where do you want your temple to be built?" Ayyappan fired an arrow and it fell at a place called Sabri. It became the great pilgrimage of *Sabrimala*. Thousands of pilgrims visit this place every year.

C-103, Purvasha Apartment
Mayur Vihar, Phase-1, Delhi-110091

आधुनिक श्रवण कुमार

संजीव जायसवाल 'संजय'

मास्टर भालू राम के कक्षा में आते ही सारे बच्चे खड़े हो गए, किंतु पिंटू बंदर मेज पर सिर रखकर सोता ही रहा। डिंकी हिरण ने कोहनी मारी तो वह हड़बड़ाते हुए खड़ा हो गया।

भालू राम ने बच्चों को बैठने का इशारा किया और फिर पढ़ाने लगे। पिंटू का मन पढ़ाई में नहीं लगता था। थोड़ी देर बाद वह फिर मेज पर सिर रखकर सो गया।

"पिंटू, तुम फिर सो गए?" भालू राम ने उसे टोका।

"सर, कल रातभर जागकर वर्ल्ड कप का फाइनल मैच देखा था इसलिए बहुत नींद आ रही है।" पिंटू ने मुँह पर हाथ रख जम्हाई भरी।

"लेकिन बेटा, अगर कक्षा में सोते रहोगे तो मैं जो पढ़ा रहा हूँ वह समझ में कैसे आएगा?" भालू राम ने शांत स्वर में समझाया।

"आप कोई नई चीज थोड़े ही पढ़ा रहे हैं! किताबों में जो लिखा है आप वही दोहराते हैं। मैं बाद में किताब से सब पढ़ लूँगा।" पिंटू ढिठाई से बोला।

मास्टर भालू राम पिंटू की कक्षा में सोने की आदत से परेशान हो चुके थे। समझाने-बुझाने का उस पर कोई असर नहीं होता था। आज उनका क्रोध भड़क उठा। उन्होंने डपटते हुए कहा, "अगर कक्षा में सोना है तो स्कूल में आते ही क्यों हो?"

"मम्मी-पापा का मन रखने के लिए। अगर मैं स्कूल नहीं आऊँगा तो बेचारों को बहुत दुख होगा।" पिंटू ने जान-बूझकर अपने स्वर को मासूम बनाते हुए कहा।

भालू राम समझ गए कि यह ऐसे नहीं सुधरने वाला है। इसके लिए कोई उपाय करना होगा। उन्होंने एक योजना बनाई।

अगले दिन पिंटू कक्षा में पहुँचा तो उसे देखते ही सारे बच्चे खड़े हो गए। पिंटू ने देखा, कक्षा के पिछले हिस्से में बिस्तर बिछा हुआ है। उसने आश्चर्यपूर्वक पूछा, "अरे, यह बिस्तर किसके लिए बिछा है?"

"आपके लिए।" डिंकी हिरण ने बताया।

"मेरे लिए? लेकिन किसने बिछवाया?" पिंटू आश्चर्य से उछल पड़ा।

"आप जैसे महान प्राणी की सेवा करना हम सबका धर्म है इसलिए मैंने बिछवाया है। आप इस पर आराम से सोइए।" तभी मास्टर भालू राम ने कक्षा में आते हुए कहा। उन्होंने कक्षा में खड़े बच्चों पर दृष्टि दौड़ाई, फिर बोले, "जब तक पिंटू जी आराम करते हैं दो बच्चे दौड़कर उनके मम्मी-पापा को बुला लाएँ।"

"मेरे मम्मी-पापा को क्यों बुलवा रहे हैं?" पिंटू घबरा उठा। उसकी समझ में ही नहीं आ रहा था कि आज यह सब हो क्या रहा है।

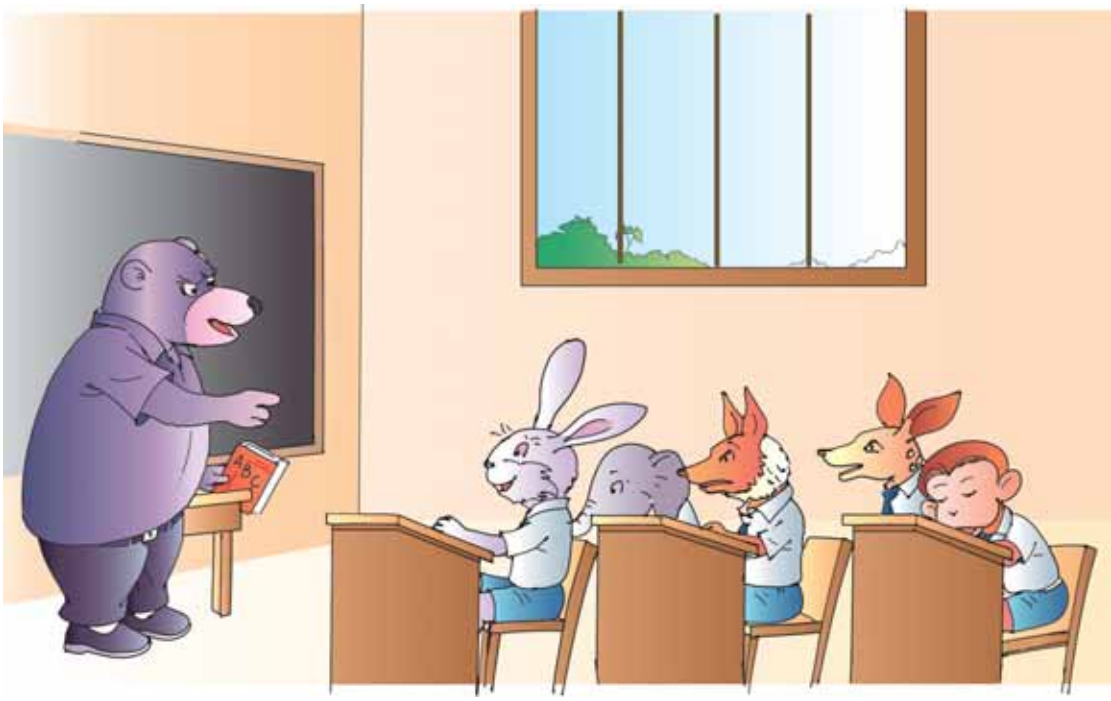

''घबराइए मत। स्कूल की तरफ से आज आपके मम्मी-पापा को सम्मानित किया जाएगा।'' भालू राम ने शांत स्वर में कहा।

''किसलिए?'' पिंटू आश्चर्य से भर उठा।

भालू राम ने चीकू खरगोश की ओर देखा तो वह खड़ा होते हुए बोला, ''पुराने जमाने में भक्त श्रवण कुमार हुए थे। उन्होंने अपने माता-पिता की खुशी के लिए उन्हें अपने कंधों पर बैठाकर सारे तीर्थों की यात्रा करवाई थी। इस युग में दूसरे महापुरुष आप हुए हैं जो अपने माता-पिता की खुशी के लिए स्कूल जैसी बेकार जगह में आने का कष्ट करते हैं। आपके इस महान त्याग से प्रभावित होकर पूरे स्कूल ने आपके साथ आपके मम्मी-पापा को भी सम्मानित करने का फैसला किया है।''

''यह खबर जब अखबारों में छपेगी तो आधुनिक श्रवण कुमार के रूप में आप पूरे देश में प्रसिद्ध हो जाएँगे।'' भालू राम ने स्नेह-भरे स्वर में समझाया।

यह सुन पिंटू की हालत खराब हो गई। उसने हाथ जोड़कर माफी माँगी और वादा किया कि आज के बाद कक्षा में कभी नहीं सोएगा और खूब मन लगाकर पढ़ेगा। भालू राम ने उसे माफ कर दिया। पिंटू को सबक मिल गया था। वह अब एक अच्छा बच्चा बन गया था।

संयुक्त निदेशक/आर.डी.एस.ओ.
सी-5300, सेक्टर-12
राजाजीपुरम, लखनऊ-17 (उ.प्र.)

हरियाली का पलना

कमलसिंह चौहान

चीं-चीं करके चिड़िया गाती
पंख फैलाकर उड़ती जाती
बातें करती आसमान से
फूलों पर तितली मँडराती

कौआ-कबूतर उड़ते जाते
घर की छतों पर फिर इठलाते
दाना चुगते मन बहलाते
तोते की टें-टें भी भाती

चौमासा वर्षा का आता
सबको देखो कितना भाता
हरियाली का पलना देखो
नदियाँ भी देखो इठलाती

चुन्नू-मुन्नू गुड्डू रानी
खिलते चेहरे हैं नादानी
मौसम संग ये मिलते जाते
धरती मंद-मंद मुस्काती।

कविता निवास, दुर्गा मंदिर के पास
रेलवे स्टेशन रोड, बीड़
जिला-खंडवा-450110 (म.प्र.)

Valiant Daughter of India

Roop N Kabra

It was early morning in Bithur near Kanpur, people were moved by a girl's wailing. Nana Sahib Peshwa's only daughter Maina was sitting on a stone and was crying incessantly over the ruins of her ancestral palace.

Just the night before, the British soldiers had blown off the palace by firing with cannons. They couldn't arrest Nana Sahib and in the hope that he might be hiding in some corner of the palace, they fired at the palace furiously. In the morning they began a sweeping search but they were disappointed.

An officer happened to look at the weeping girl. He felt that she might be Nana Sahib's daughter Maina. He at once called other people and got her identified. She was arrested immediately and presented before an officer of higher rank.

In the camp she was cruelly tortured and was inquired about Nana Sahib. When no torture could move her she was sentenced to death.

Next day she was fastened to the mouth of a big cannon and was asked again about Nana Sahib. She was assured that she could be freed if she told them the whereabouts of her father.

Maina said that she knew nothing. She remained firm. The cannon roared and a flaming shell came out of the mouth of the cannon and her body was torn to shreds.

In this way the valiant little Maina sacrificed her life for her motherland. History might have forgotten this brave girl but the country feels grateful even today.

A-438, Kishore Kutir
Vaishali Nagar
Jaipur-302021
(Rajasthan)

The Mystry of Redcliff

Ankit Meena

It was a fine day. I heard a knock on the door. My mom opened the door. I saw a tall man with brown hair and black cold eyes standing in front of the door. He was holding an envelope in his hand. I realised that he was the postman who had come to deliver a letter.

My mom took out the letter from the envelope and in bold printed words it was written that 'Mr. Antonio has cleared the entrance exam of Redcliff Academy.' Seeing this, a chill went throughout my body. I was shocked and with great disappointment I left the room.

After dinner, I went to sleep but could not sleep because of the letter. I went to the other room and read the letter again. It said that I was required to report to the school next week on Monday.

As I was leaving the room, I saw the photograph of my father lying on the table. He died in a road accident when I was only two years old. Just then, I saw my mom standing on the door. The door was ajar. I rushed towards her and started crying. She lifted my spirits up and told me that Redcliff Academy was a nice boarding school. She also promised me that she would come to meet me every month. Even though my mom tried to console me, the night seemed to be the longest night of my life.

On Sunday, my mom packed the bags. Next morning, we boarded a taxi and about 4 pm we reached near a diversion. One path was leading to the Castaway Cliff and another to Redcliff, we took the road to Redcliff.

The cliff looked like as if it was swimming in the mist with no roots in the Earth. The road had a line of sparkling round buttons in the middle. When the driver switched on the headlights of the car, they gleamed in the fog and guided him well. As we were near the Redcliff Academy, the road began to slope upwards and finally we reached our destination.

As we stepped out of the taxi, a cold breeze hit me and I shivered with cold. I felt awkward on seeing the academy.

The Redcliff Academy was surrounded by a massive wall. The school building had diamond paned windows and hefty wooden doors. The big towers of the building looked awful.

It was the strangest place I had ever seen before. I thought that the people of the academy live and die only within its walls and have nothing to do with the outer world.

We went to the staff room. Some of the teachers were sitting in the room. One of the teachers came to us, he was very fuddy-duddy. He asked my mom, "What brings you here?" She told him, "My son Antonio has cleared the entrance..." Before she could say anything further, he interrupted and said "Alright!" He gave some documents and asked us to complete the admission procedure.

He told her not to worry about anything and finally, she left for home. When she sat in the taxi, there were tears in my eyes and she went out of my sight.

The teacher came to me and led me to the dormitory. I saw two boys in the dormitory. The teacher introduced me to them. One of the boys was having black curly hair and brown eyes; his name was Bill and another was having brown straight hair and fair complexion; his name was Charlie. Teacher instructed them to help me. They took my luggage and told me to arrange my things in the empty cupboard and went downstairs.

Next morning I went to my class room. There were 38 boys and girls in my class. After self-study hour in the evening, we went for dinner and then to the dormitory to sleep.

Around two o'clock I woke up with a jerk. I was feeling very thirsty. As I started drinking water, I heard a strange noise. I saw someone running towards the dormitory. I had a gut feeling that he was standing behind me. I turned to see him and there he was! He was wearing

black dress. He had bloodshot eyes and thick thatch of hair were falling over his face. His terrible features frightened me.

Without any delay, I dashed to my bed and covered my face with blanket. There was a deadly silence in the dormitory, when I took out my head from the blanket I saw him again. He was standing in front of me. I tried to shout but was unable to and I lost my consciousness.

In the morning when I woke up I looked at my watch. It was seven o'clock. I was late. I hastened up to attend my class downstairs. At lunch I told my friends about that dreadful man. I did not notice that a girl was also listening to my story. When I finished my story, my friends introduced me to her. She was Charlie's friend. She had beautiful eyes and black hair.

Charlie and Bill told me the history of the academy. They told me that earlier a British family used to reside in this large building. They had built it in 1865. Their son Nick was habitual of digging earth to explore new things. One day he went to the desolate tower. Though he knew that the tower was built upon a graveyard, he started digging it. He found a grave; he opened it and saw that several bones were lying in the grave. Suddenly, the lights went off but he was not scared. He laid his hands inside the grave and found a knife. He took the knife and covered the grave again. He went to his room and kept the knife in his cabinet.

At midnight he heard some noise, he saw that the door of the tower was open and a man was coming out of the tower, wearing a black dress. His face was covered with his hair. Nick rushed to his parents' room and on his way he saw the man again. He yelled out of fear and returned to his room and locked the room. He tried to look at the man from the keyhole but was not able to see anything.

All of a sudden, he saw the man standing in front of him. Before he could do anything, he disappeared. Nick picked the knife and went to his parents' room. He had gone mad. He thought that instead of his parents', ghosts were sleeping on the bed. He pierced the knife through them and killed them and afterwards he killed himself.

As Charlie was telling the story, I saw bright yellow eyes staring at us, it was a cat. I asked my friends whose cat it was? They said that the cat belonged to our class teacher.

After having dinner we went to sleep. At midnight I heard the scary noise again. I figured out that it was coming from the third floor.

I went to the third floor, it was dark, gloomy and isolated. I ventured into the first room of the floor and stuck upon some sports items. I saw a shadow of a man moving in the room. I went closer to him and was shocked to see that he had no eyes.

Out of fear, I ran and fell down. He was running towards me. I picked up a javelin and threw it towards him. It hit him hard and he died. As I stood up I saw that he was not a ghost. *It was a cat!* I was going mad like Nick. I went to the dormitory and tried to sleep but couldn't sleep as I had killed a cat.

In the morning, the teacher asked us to help her find out her cat but none could find it. I suggested Charlie to search for it on the third floor. As we entered the room, we saw that the cat was lying on the floor; dead.

The night came. I went to sleep early at about nine o'clock. Again my sleep was disturbed at midnight because of the same noise. I saw from the window that the door of the tower was open and the same dreadful man was coming out of the tower.

I woke Charlie up and told him that I saw a man standing outside the tower but he didn't believe me. He thought that I was playing a prank with him, so he went to sleep.

Suddenly, the man appeared before me. I wished to shout but was unable to. He disappeared and the knife was lying before me. I pierced the knife into my friend's body, after that I pierced the knife into my own body. I screamed and when I opened my eyes I saw myself lying on the bed.

My mom rushed to me and asked me why was I screaming? I told her that I had a terrible dream. Then I heard someone knocking the door. My mom went to open the door. From the corridor I saw a man, with brown hair and black cold eyes, having an envelope and a bag in his hand.

He was the Postman…

Oak Grove School
Mussorie (Uttarakhand)

शेरनी का बच्चा

एलिजाबेथ टुट्टी

एक शेरनी थी। उस शेरनी का एक बच्चा (शावक) था। वह उससे बहुत प्यार करती थी। शावक करीब दो महीने का था। शेरनी हमेशा शिकार करके लाती थी, बच्चा मांस खाता और सो जाता था। शेरनी रात को शिकार करती थी। सुबह वह अपने बच्चे के साथ समय बिताती थी। वह हमेशा अपने बच्चे को समझाती कि कभी भी अकेले घूमने नहीं जाना।

दोपहर में एक दिन जब वह सो रही थी तभी उसके शावक को एक मेंढक दिखा। वह सोचने लगा कि आखिर माँ मुझे बाहर जाने से मना क्यों करती है! शेरनी का बच्चा उस मेंढक को पकड़ने के लिए बढ़ा। मेंढक उछल-कूद करते हुए दूसरी जगह चला गया। मेंढक का बच्चा उसका पीछा करते-करते बहुत दूर पहुँच गया। आखिर में शेरनी के बच्चे ने उस मेंढक को पकड़ लिया।

अब वह शावक अपनी माँ को मेंढक दिखाने के लिए मुड़ा तो उसे उसकी माँ नहीं दिखी। उसे आगे से एक शेर आता दिखाई दिया। अनजान शेर को देखकर शावक बहुत डर गया। उसके हाथ से मेंढक निकल गया। वह रोने लगा। शेर उसकी ही तरफ आ रहा था। वह रोकर अपनी माँ को बताना चाह रहा था कि वह वहाँ है।

शेर जब उससे कुछ दूर था तब तक शेरनी अपने बच्चे को ढूँढ़ते हुए वहाँ आ पहुँची और उस शेर से लड़ने लगी। शेर डरकर भाग गया। शेरनी अपने बच्चे के पास गई। उसका बच्चा डर से रो रहा था। वह उसे समझाने लगी कि अकेले कहीं मत जाओ। जब तुम थोड़े बड़े हो जाओगे तब जाना। उसके बाद शेरनी अपने बच्चे को साथ लेकर अपने घर लौट गई। शावक ने प्रण किया कि अब से वह अपनी माँ की बात मानेगा।

प्रोजेक्ट सेंट्रल स्कूल, किरीबुरू
पश्चिम सिंहभूम-833222 (झारखंड)

यूकेलिप्टस हटाओ

माधुरी टिल्लू

शालू जोर-जोर से छींक रही थी। मम्मी जी ने मुझे बुलाकर कहा, ''बहू, इसके रूमाल पर यूकेलिप्टस के तेल की दो बूँदें डाल दो और सूँघने को दे दो इसे। छींकें भाग जाएँगी इसकी।''

''दादी जी, हमारे घर यह तेल है?'' शालू ने पूछा।

''हाँ-हाँ, मुझे तो इस तेल को घर में रखने की आदत हो गई है। तुम्हारे दादा जी तो फॉरेस्ट ऑफिसर थे। एक बार हमारी मुक्तागिरी के जंगल में पोस्टिंग हो गई थी। वहाँ यूकेलिप्टस के इतने पेड़ थे कि दूसरा पेड़ बड़ी मुश्किल से मिलता। वहाँ के लोग इन पेड़ों से तेल निकालते थे और उसे बेचने का ही उनका धंधा था। इस तेल से कफ सीरप भी बनाते हैं। मैं तो तेल जरूर रखती थी घर में।'' मम्मी जी शालू को बता रही थीं।

''शालू बेटा, गरमी के दिनों में इसी तेल के कारण जंगल में आग लग जाती थी और जानवरों को बचाने के लिए हमें किसी भी समय भागना पड़ता था।'' पिता जी ने कहा।

मैंने रूमाल पर यूकेलिप्टस तेल की दो बूँदें डालीं और शालू को दे दिया। शालू ने कहा, ''मुझे तो इस तेल की खुशबू बड़ी पसंद है।'' शालू ने पास पड़ा हुआ अखबार लिया और देखने लगी। उसे खबरें पढ़ने का शौक था।

''ओ हो दादा जी, दादी जी, देखिए, हम बात कर रहे हैं यूकेलिप्टस की और अखबार में लेख छपा है 'यूकेलिप्टस हटाओ'। बड़ा गुस्सा आ रहा है मुझे। कितने हरे-हरे ऊँचे-ऊँचे पेड़ होते हैं ये। पेड़ों को गिराना तो गुनाह है न दादा जी?''

''हाँ, गुनाह तो है, लेकिन आगे भी तो पढ़ो। दिखाओ पेपर! इसमें लिखा है जहाँ-जहाँ इन पेड़ों को लगाया गया है, वहाँ-वहाँ अब समस्याएँ बढ़ रही हैं।'' पिता जी पढ़ रहे थे।

''ऑस्ट्रेलिया से इन पेड़ों को दुनियाभर ने लगाया और अब कहते हैं इन्हें हटाना पड़ेगा।'' शालू ने कहा।

मैं भी काम खत्म करके कुरसी पर बैठी। मैंने शालू को समझाकर कहा, ''शालू, कोई भी निर्णय लोग अनुभव से लेते हैं। जैसे, अखबार में यह भी है कि अफ्रीका ने अपनी स्थानीय वनस्पति इन यूकेलिप्टस की जगह लगाने का निर्णय लिया है। इन पेड़ों के कारण वहाँ के स्थानिक जीव कम हो गए हैं, पक्षी कम हो गए, साँप भी कम हो गए, स्थानिक प्राणी भी कम हो गए हैं। इसलिए अब वे जाग गए हैं और यूकेलिप्टस हटाने का निर्णय उन्होंने लिया है। उन्होंने ठीक ही किया है।

''शालू, तुम्हें पता है ये पेड़ बहुत ज्यादा पानी खींचते हैं। इसलिए इन्हें ज्यादा पानी के साथ में लगाया जाता है। हमारे पार्क के पास

जो बहुत बड़ा नाला है इसी वजह से पार्क के किनारों पर ये पेड़ लगाए गए हैं, ताकि वे नाले का पानी खींच सकें।'' मैं बता रही थी।

''लेकिन गुड़िया, यदि हम इन पेड़ों को अपने घर की बाऊंड्री बनाएँगे तो क्या होगा?'' पिता जी ने शालू से पूछा।

''ओह नो!'' शालू चिल्लाई। ''ये पेड़ तो हमारे जमीन का सारा पानी पीते रहेंगे और फिर हमारे बाग के पौधे सब खतम हो जाएँगे।''

''एकदम सही गुड़िया। यही बात केपटाउन वालों को लग रही है। इन्हीं पेड़ों के कारण वहाँ की वनस्पति खत्म हो रही है। कैलिफोर्निया के कुछ भागों में इन पेड़ों के जंगल लगाए गए थे। वहाँ से भी इन पेड़ों को इसी कारण हटाया जा रहा है कि इनके कारण ही उनके अपने पशु-पक्षी, कीट, जीव-जंतु सब खत्म हो रहे हैं। देश के पर्यावरण पर दुष्परिणाम दिख रहे हैं।'' पिता जी ने शालू को समझाया।

''दादा जी, आप तो फॉरेस्ट ऑफिसर थे। मुझे इस यूकेलिप्टस के बारे में और बताइए ना!''

''ओ.के.! मुक्तागिरी में जब हम थे, जंगल में घूमते समय मैंने इस यूकेलिप्टस के ऊँचे-ऊँचे पेड़ देखे हैं—60-60 फीट के। इतने ऊँचे पेड़ देखकर मुझे लगता था, इस पेड़ पर पक्षी घोंसला कैसे बनाएगा, अपने बच्चों की रक्षा कैसे करेगा? पेड़ में ब्रश के जैसे लाल-लाल फूल आते हैं। बड़े ही सुंदर होते हैं। उसी समय थोड़े पक्षी, कीट इस पेड़ के पास आते थे, नहीं तो ये अकेले खड़े रहते हैं।'' पिता जी ने यूकेलिप्टस के बारे में शालू को बहुत कुछ बताना चाहा।

''अब तो मुझे इस पेड़ से ज्यादा बरगद के पेड़, जामुन, इमली और आम के पेड़ ही अच्छे लग रहे हैं। दादा जी, कश्मीर के ऊँचे पेड़ हम बिहार में तो नहीं लगा सकते?'' शालू ने जिज्ञासा की।

''बेटा, तुम्हारा दिमाग तो बड़ा तेज है। पहाड़ी इलाके में उगने वाले पेड़ उसी तरह के समरूप जलवायु वाले अन्य पहाड़ी इलाके में ही उग सकते हैं। उसी तरह केपटाउन, कैलिफोर्निया, भारत जैसे जगहों पर यूकेलिप्टस कैसे लगेगा? उसके लिए ऑस्ट्रेलिया ज्यादा अच्छा होगा। बहू, देखो, मैं शालू को दो चित्र दिखाता हूँ। देखूँ, वह पहचानती है या नहीं? शालू, बताओ, यह कौन है और यह कौन है?'' पिता जी दो चित्रों पर बारी-बारी उँगली रखकर पूछ रहे थे।

''यह? यह तो कोआला है और यह है खरगोश।'' शालू ने बताया।

''कोआला खाता है यूकेलिप्टस के पत्ते, लेकिन खरगोश नहीं खाता इसे। उसे तो नरम घास चाहिए, वह इस पेड़ की छाँव में नहीं मिलती उसे। फिर वह दूर चला जाता है। पानी की कमी के कारण जमीन की नमी खत्म हो जाती है। फिर घास कैसे उगेगी? पशु-पक्षी, कीट, जीव-जंतु सब इस पेड़ के कारण दूर चले जाते हैं। जहाँ उन्हें अपना भोजन, पानी, रहने का ठिकाना मिलेगा वहीं वे बसते हैं।'' पिता जी को आज शालू को बताने में मजा आ रहा था।

''यही कारण है कि लेखक भारत को भी यूकेलिप्टस हटाने का सुझाव दे रहा है।'' पिता जी पेपर दिखाते हुए कह रहे थे।

''दादा जी, दादा जी, अब मुझे दीजिए तो पेपर। मैं जरा गौर से पढ़ूँगी।'' शालू ने अखबार हाथ में लिया और दूर जाकर पढ़ने लगी।

''बहू, सुनती हो! मुक्तागिरी में लोग इन यूकेलिप्टस के पेड़ों से रंग बनाते थे। सिस्क के कपड़ों को रंगने में उसका उपयोग करते थे।'' मैं मम्मी जी की बातें सुन रही थी।

''बहू, जब तुम्हारे ससुर जी जंगल का टूर करते थे तब मुझे बड़ी चिंता लगी रहती थी। इन यूकेलिप्टस के पेड़ों की टहनियाँ कब टूटेंगी पता नहीं लगता। जोर से हवा आई और टूटी टहनियाँ। कच्चे ही पेड़ होते हैं ये!'' मम्मी जी बोल रही थीं।

''दादा जी, दादा जी, इसमें लिखा है, यदि इन पेड़ों को हटाकर आप देसी पौधे वहाँ, उस जगह लगाते हो तो वहाँ के स्थानिक जीव वापस आ सकते हैं। यदि हमें खूब हरी-भरी घास चाहिए, खरगोश चाहिए, बंदर भी देखने हैं, जीव-जंतु देखने हैं अपने देश में तो इन पेड़ों को हटाना ही पड़ेगा।'' शालू पढ़कर बता रही थी।

''मतलब तो यही हुआ कि यह पेड़ स्थानिक जानवरों, पक्षियों, जीव-जंतुओं की मदद नहीं करते। एक समय था हमें इन पेड़ों को हमारे देश में लाने का। जल्दी-जल्दी ये बढ़ते हैं। बढ़ गए, हमारे वन संपन्न हुए, हरे भी हुए। लेकिन हमारे देश का पर्यावरण बदल गया। दूषित हो गया है।'' पिता जी बोले जा रहे थे।

''पेड़, जानवर, घास, कीट, जीव-जंतु इनका चक्र संतुलन बिगड़ गया है। इसलिए हमें भी 'यूकेलिप्टस हटाओ' पर सोचना चाहिए या नहीं? क्यों शालू?'' पिता जी जोर-जोर से हँसने लगे। हम भी उनकी हँसी में शामिल हो गए।

158 सी/ए2बी, पश्चिम बिहार
नई दिल्ली-110063

प्रयाग शुक्ल की दो कविताएँ

खाया हमने एक संतरा

खाया हमने एक संतरा
थोड़ा-थोड़ा पीला था वह
थोड़ा-थोड़ा हरा-हरा
खाया हमने एक संतरा

थोड़ा-थोड़ा मीठा था वह
थोड़ा-थोड़ा खट्टा था
थोड़ा-थोड़ा मोटा था वह
थोड़ा हट्टा-कट्टा था

थोड़ा-थोड़ा सूखा था वह
थोड़ा रस से भरा-भरा
हाँ भाई, रस से भरा-भरा
थोड़ा-थोड़ा पीला था वह
थोड़ा-थोड़ा हरा-हरा
खाया हमने एक संतरा।

एक गिलहरी

एक गिलहरी खाती बिस्कुट
कुट कुट कुट कुट कुट कुट कुट
फिर वह भागी जाती है
दौड़ी भागी जाती है
पेड़ों पर चढ़ जाती है
उतर वहाँ से आती है
झटपट झटपट झटपट झट
फिर थोड़ा सुस्ताती है
फिर वह बिस्कुट खाती है
फिर वह भागी जाती है
कुट कुट कुट कुट कुट कुट कुट
कुट कुट बिस्कुट खाती है।

prayagshukla@gmail.com

पहेलियाँ

उदय ठाकुर

1. छोटी-सी है पर है, बड़े काम की
रावण की वर्दी में सेना श्रीराम की।

2. छोटी-सी मुनिया
एक ही हाथ पे
उठा ली सारी दुनिया।

3. छोटा-सा बालक, रसभरी बोली
आँगन में नाचे, रस्सी जो खोली।

4. सारस की टाँगें, उल्लू-सी आँख
टाँगों से कान पकड़े, मुख से नाक।

5. डोरी से बंध गया, तीर कागज सजा कमान पे
योद्धा धरती पर खड़े, युद्ध आसमान में।

6. कितनी सारी थी, अब कम हो गई
रोते-रोते बेचारी खत्म हो गई।

7. एक शब्द अँग्रेजी का, एक है हिंदुस्तानी
फूलों का राजा है यह, सब्जी की रानी।

8. दाँत है, जुबान नहीं
सर है, कान नहीं
चलती है, जान नहीं।

9. एक अनोखा फल ऐसा है
कैसे काटे उस पर छपा है।

10. यही मायका है, यही है ससुराल
मर जाऊँगी, बाहर न निकाल।

उत्तर : 1. काली मसूर की दाल 2. लौंग 3. लट्टू 4. ऐनक 5. पतंग 6. बर्फ 7. फूलगोभी 8. कौड़ी 9. खरबूजा 10. मछली

रोटरी स्कूल फॉर डेफ
रामबाग रोड, अंबाला छावनी (हरियाणा)

गणित में दिलचस्पी जगाने का खेल

हाल ही में एक शाम वेस्ट काल्डवेल, न्यू जर्सी की एक लाइब्रेरी में पजामा पार्टी आयोजित की गई। राजकुमारों की पोशाक पहने 20 छोटे बच्चे चमकीले जानवरों के स्टिकर गिन रहे थे और उन्हें घर में बनाए गए चौकोर बोर्ड पर चिपका रहे थे।

एस्ट्रोफिजिसिस्ट से घरेलू महिला बनी लारा बिलोड्यू ओवरडेक इस नजारे को गंभीरता से देख रही थीं। दरअसल, पजामा पार्टी का आइडिया उन्हीं का था। वह गैर-लाभकारी संस्था बेडटाइम मैथ (सोने से पहले गणित की शिक्षा) की संस्थापिका हैं।

लारा चाहती हैं कि बच्चे अंकों से प्यार करने लगें। उनका मिशन है कि बच्चों को रात में सोने से पहले रोचक अंदाज में गणित सिखाई जाए।

लारा ने एक साल पहले 'बेडटाइम मैथ' नाम की साइट लॉन्च की थी। अब इसका एप और किताब बाजार में आने वाली है।

लारा की पहुँच अमेरिका की कई लाइब्रेरी तक हो चुकी है। बेडटाइम मैथ का फंडा साधारण है। इसमें रोज गणित के सवाल दिए जाते हैं।

इन्हें तीन श्रेणियों में बाँटा गया है। पहला 'वी वंस' प्री-किंडरगार्टन बच्चों के लिए है। दूसरा 'लिटिल किड्स' किंडरगार्टन से दूसरी कक्षा तक और तीसरा 'बिग किड्स' दूसरी कक्षा से बड़े बच्चों के लिए है।

गणित के सवाल कहानियों, पहेलियों के रूप में दिए जाते हैं। जोड़, घटावा, गुणा, भाग

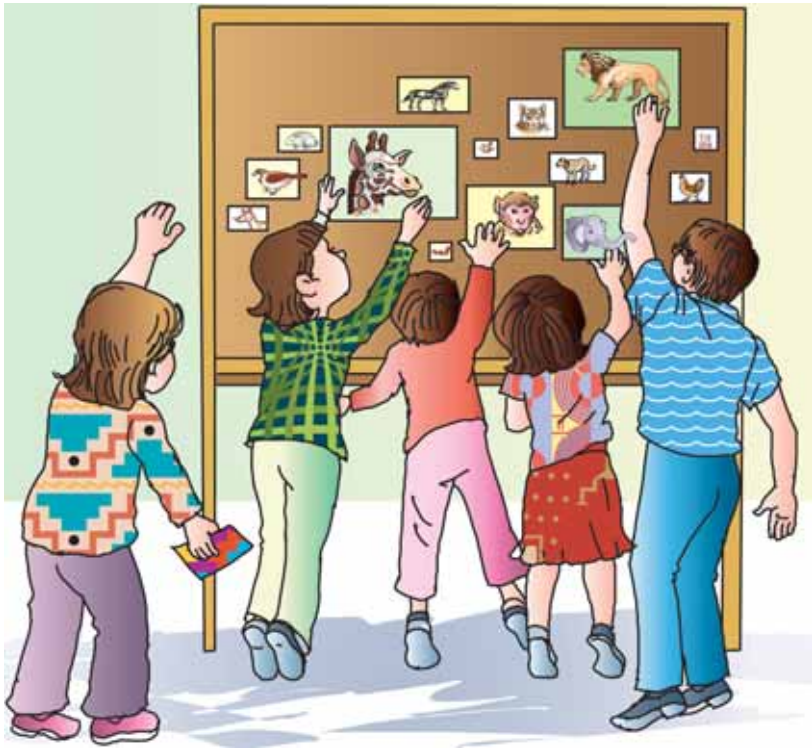

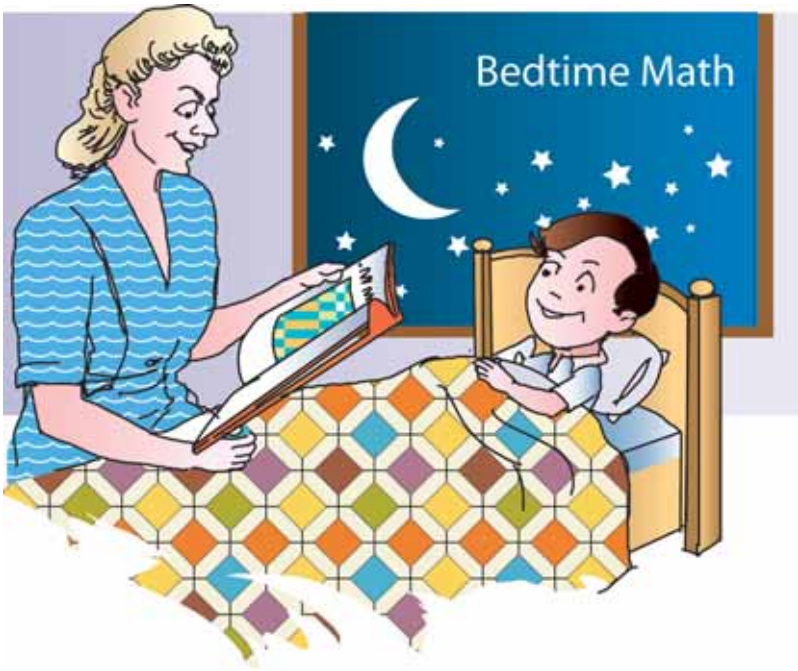

सिखाने के लिए कैंडी, च्युइंग गम, चॉकलेट जैसे नाम प्रतीक के तौर पर इस्तेमाल होते हैं ।

लारा को उम्मीद है कि बच्चों की पसंद के पजल गणित को लेकर उनकी अनिच्छा का इलाज हो सकता है। शोध से पता लगा है कि गणित में बच्चे की प्रवीणता उसकी शैक्षिक सफलता का संकेत देती है। लेकिन, गणित में 34 औद्योगिक देशों में अमेरिकी छात्र 25वें स्थान पर हैं।

'मैथ फॉर लव' नामक संस्था चलाने वाली डैन फिन्केल का कहना है कि बेडटाइम मैथ प्रोजेक्ट पर कई लोग काम कर रहे हैं। प्रोजेक्ट का उद्देश्य स्कूल पहुँचने से पहले ही बच्चों में गणित के प्रति रुचि जगाना है।

सिएटल स्थित डैन की संस्था शिक्षकों को गणित की शिक्षा दिलचस्प अंदाज में देने के गुर बताती है।

लारा कहती हैं कि हम गणित के बारे में बच्चों को वैसा ही महसूस कराना चाहते हैं जैसा खाने के बाद वे मिठाई के लिए महसूस करते हैं।

पिछले साल फरवरी में लारा ने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों को गणित पढ़ने के लिए अपने परिवार में अपनाए जा रहे तरीके के बारे में ई-मेल भेजा।

इसके बाद से 20,000 लोग उनके रोजाना भेजे जाने वाले संदेशों से जुड़ गए हैं। बेडटाइम मैथ में पाँच लोगों का स्टाफ है।

बेडटाइम मैथ बच्चों के कौशल को बढ़ा सकता है। पिछले दिनों बेडटाइम मैथ ने न्यूयॉर्क में गणित के नए म्यूजियम में पजामा पार्टी का आयोजन किया था।

इसमें बच्चों को घुमावदार रास्तों पर ट्राइसिकल चलाकर ज्योमेट्री के प्रयोग सिखाए गए। वहाँ कोई 100 बच्चों ने गर्म चॉकलेट की चुस्कियाँ लेकर घड़ियाँ और डायग्राम बनाए।

दैनिक भास्कर में प्रकाशित एक रिपोर्ट

हाथी काका

डॉ. अनिल सवेरा

हाथी काका! हाथी काका!
कहाँ खो गए थे?
क्या चिड़िया के घोंसले में
सो गए थे?
क्या चिड़िया ने चोंच मारी
जो रो रहे थे?
क्या रो-रो रूमाल भीगा
धो रहे थे?
क्या मल-मल नदिया में
नहा रहे थे?
क्या यूँ ही तुम पानी
बहा रहे थे?
क्या मस्ती में पेड़ों को
हिला रहे थे?
क्या दोस्त-दुश्मनों को
मिला रहे थे?

829, राजा गली, जगाधरी
(हरियाणा)

My Page

Unto Reality

Cadet Suraj Kumar Verma

One day I sat beside my bed
Thinking about my life
Which was once like a rose bright red
By the caring sweet hands
Of my mother I was fed
I also remember myself as a child
Angry with cheeks fluffy red

I would be enraged
Without a reason in a second
And then my mother would undertake
Her task to make her 'king' happy
And my dear father
Would change my broken toys
And let me play with his beard

But times have passed
And days gone ahead
Now as a young man
I remember them with a mood very sad
I remember the delicious sweets
And cakes she baked
I remember the stories
Of the princes and swords she said
I remember how she
Slept on the floor
And me on the fluffy bed
Now I am away from her
Toiling hard to move ahead

But now I know why she has
Put me away from her gentle shade
I am now an adjustable boy
With no anger in my head
I eat with a fork and knife
And sleep on a simple bed

Though it is a bit tough
I promise you dear mother
That I will always in my life
Take care that your head remains high!

Rashtriya Indian Military College
Dehradun-248003, Uttarakhand

The Selfish Squirrel

Ramesh Chandra Dash

Spring season — trees were full of flowers and fruits; birds were singing songs happily and farmers were happy and busy in leisure activities as they had good harvest this time.

There was a mango tree near a village pond. It was also full of mangoes. There lived a squirrel. He thought that these mangoes were his property. So he decided that he would not give mangoes to anybody. He hid all the mangoes behind the leaves. Seeing the selfishness of the squirrel the tree felt unhappy.

The tree compared the inherent qualities of a squirrel with that of a man. The tree thought that man is his best friend. Without the help of man he could not survive a moment. He also saw an army of ants scrawling on his trunk. He praised the ants because they are the most disciplined animals who work hard.

Seeing ants, the tree realised that a strong will never fails. He must do something to teach squirrel a lesson. So he requested Sun to put his rays on the mangoes to make them ripe. The Sun granted him his wish. Then he requested wind to blow over the mangoes to loosen their grip to make them fall on the ground. The wind did accordingly.

Then the mangoes fell down. People became happy to get them. Ants and other animals were also happy. A good number of mangoes fell down from the tree but the squirrel had to jump from one place to another to get hold of mangoes. He was disappointed as he could not get a single piece. He left the tree in search of food and repented his foolishness.

Gorual U P School
PO-Gorual, Brahmagiri
Puri (Odisha)

खुद करके देखो

फोन नंबर पूछो, उम्र बता दो

आइवर यूशिएल

फोन नंबर पूछकर सही उम्र का पता कैसे चलेगा, यह जानने के लिए तरकीब हम तुम्हें सिखाए देते हैं।

सबसे पहले तो तुम अपने किसी साथी से उसका फोन नंबर पूछो और साथ ही उससे इस नंबर को किसी कागज पर लिख लेने को कहो। जब वह नंबर लिख ले तो उसे कहो कि दाहिनी ओर से चार अंक छोड़कर वह बाकी को काट दे।

इसके बाद बचे हुए चार अंकों को उलट-पलटकर एक नई संख्या बनाने के लिए बोलो अपने इस दोस्त को, और साथ ही यह भी कि नई संख्या बनाने के बाद बड़ी संख्या में से छोटी को घटा दे।

इस तरह नतीजे के तौर पर जो संख्या मिले उसके सारे अंकों का अब योग निकालना है तुम्हारे साथी को। हो सकता है कि योगफल फिर से दो अंकों वाली संख्या हो। ऐसा होने पर इनको भी जोड़ना पड़ेगा, ताकि अंत में नतीजा सिर्फ एक अंक में मिले। इस नतीजे में तुम्हारे दोस्त को 7 जोड़ना होगा।

इसके बाद अपने साथी को तुम्हें यह कहना होगा कि वह अपने जन्म के वर्ष के आखिरी दो अंक (यानी दाहिनी ओर वाले पहले दो) इस संख्या में जोड़े और फिर इस तरह अंत में मिली संख्या तुम्हें बता दे।

तुम मन-ही-मन इस संख्या में से 16 घटाओगे तो तुम्हें अपने साथी के जन्म का वर्ष मिल जाएगा, जिससे उसकी उम्र का पता आसानी से लगाया जा सकता है।

मान लो, तुम्हारे साथी का टेलीफोन नंबर है-272856

दाहिनी ओर से केवल चार अंक लेने पर 2856

तुम्हारा साथी इन 4 अंकों से जो नई संख्या बनाता है वह है (मान लो) 6852

बड़ी में से छोटी घटाने पर

6852-2856 = 3996

इस संख्या के सारे अंकों का योग :

3 + 9 + 9 + 6 = 27; 2 + 7 = 9

7 जोड़ने पर 9 + 7 = 16

साथी द्वारा अपने जन्म वाले वर्ष के आखिरी दो अंक जोड़ने पर (मान लो वह वर्ष है 1981-16 + 81 = 97

इस तरह सारा गणित चुपचाप खुद करने के बाद तुम्हारे मित्र द्वारा 97 की संख्या तुम्हें बताए जाने पर तुम मन-ही-मन इसमें से 16 घटा दोगे। 97-16 = 81

और लो, उसके जन्म का वर्ष तुम्हें मिल गया। अब हमारे तरकीब बताए बिना तुम उम्र की गणना तो कर ही लोगे।

सी-203, कृष्णा काउण्टी
रामपुर नैनीताल, मिनी बाईपास
बरेली-243122 (उ.प्र.)

पुस्तक समीक्षा

हवेली का रहस्य

दो भाई, कमल और विमल अपने पिता के साथ मेला घूमने गए, लेकिन परिस्थितियाँ कुछ ऐसी बनीं कि वे वहाँ की एक पहाड़ी पर बनी हवेली में चल रही आतंकवादी गतिविधियों को उजागर कर हीरो बन गए। इस काम में उनकी बहन पिंकी और दोस्त शशांक का भी साथ रहा। कैसे ये किशोर वय की ओर बढ़ते बच्चे घूमते-घूमते उस पहाड़ी तक पहुँच गए और वहाँ बम-बारूद का जखीरा देख पुलिस को खबर की यह सब घटनाक्रम बड़े ही रोचक अंदाज में पुस्तक में लिखा गया है। एक साहसभरी रोमांचपूर्ण गाथा से भरी पुस्तक।

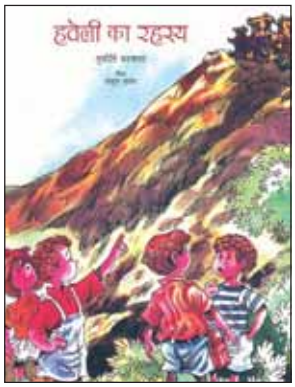

हवेली का रहस्य
सुकीर्ति भटनागर
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
₹ 60.00

नटखट कुप्पू के अजब-अनोखे कारनामे

चौबीस अध्यायों में नटखट कुप्पू के अजब-गजब कारनामों को रोचक ढंग से, किंतु सरल भाषा में वरिष्ठ लेखक द्वारा इस तरह संजोया गया है कि यह पूरी किताब एक धारावाहिक उपन्यास जैसी बन गई है। कुप्पू कभी खेल के मैदान में होता है तो कभी बेल्ट लगी कुरसी पर आकाश की सैर करता है। कभी वह गुलाबी देश पहुँच जाता है जहाँ सब कुछ गुलाबी-ही-गुलाबी होता है। सरस, रोचक और मजेदार पुस्तक, जिसे पढ़ना आनंदमय लगता है।

नटखट कुप्पू के अजब-अनोखे कारनामे
प्रकाश मनु
राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत
₹ 110.00

R.N.I. No. -64771/96 Postal Regd. No-DL-SW-1-4066/2012-14
Licenced to post without prepayment, L. No. U (SW) 24/2012-14 Mailing Date :. 20/21 Same Month
Date of Publication: 14 /02/2014